दत्त कार्य

मीरा के पद

प्रश्न १. मीरा बाई की भक्ति की क्या विशेषताएं हैं ?

उत्तर : मीरा बाई श्री कृष्ण की अनन्य भक्त है ।वे श्री कृष्ण को अपने प्रियतम के रूप में देखती हैं । उनके लिए सर्वस्व समर्पण की भावना उनके हृदय में विद्यमान है । अपनी भक्ति में घर -बार सब कुछ त्याग कर श्री कृष्ण की भक्ति के गीत गाने व् नृत्य में समय व्यतीत करने की आकांक्षी है ।मीरा बाई की भक्ति में दास्य भाव की प्रबलता है ,जो उनके सेवा-भाव को प्रकाशित करता है ।

प्रश्न २ .मीरा के पदों में द्वितीय पद का प्रतिपाद्य लिखिए ।

उत्तर :द्वितीय पद में मीराबाई श्री कृष्ण के सानिध्य का लाभ उठाने की आकांक्षी है । उनके अंदर अपने प्रभु के प्रति दास्य भाव अत्यंत प्रबल है ।इस दास्य भाव के माध्यम से वे दिन -रात प्रभु के दर्शन पाने में समर्थ हो पाती हैं ।मीरा बाई ने इस पद में श्री कृष्ण के रूप -सौंदर्य का भी वर्णन किया है ।

प्रश्न 3.भगवान को नरहरि का रूप क्यों धारण करना पड़ा ?

उत्तर : हिरणकश्यप नामक एक अत्याचारी एवं अभिमानी राजा था ।वह स्वयं को ही ईश्वर मानता था ;परन्तु उसका पुत्र ईश्वर का परम् भक्त था । हिरणकश्यप ने प्रहलाद को तरह -तरह से समझाया कि वह प्रभु -भक्ति को छोड़कर उसे (हिरणकश्यप) ही भगवान माने पर प्रहलाद तैयार न हुआ ।उसके पिता ने उस तरह -तरह की यातना दी पर प्रहलाद का विश्वास प्रभु में बढ़ता ही गया । एक बार जब प्रहलाद की जान लेनी चाही तो भगवान ने नरसिंह का अवतार धारण कर प्रहलाद की रक्षा की और हिरणकश्यप को मार डाला ।

प्रश्न ४.`तीनूं बाताँ सरसी `के माध्यम से मीराबाई क्या कहना चाहती है ? उसकी यह मनोकामना कैसे पूरी हुई ?

उत्तर : मीरा बाई अपने प्रभु श्रीकृष्ण की अनन्य भक्त थी। वह श्रीकृष्ण की चाकरी करके उनका सामीप्य पाना चाहती थी ।इस चाकरी से उन्हें अपने प्रभु के दर्शन मिल जाते । उनका नाम स्मरण करने से सिमरन रूपी जेब खर्च मिल जाता और भक्तिरूपी जागीर उन्हें मिल जाती । उन्होंने अपनी इस मनोकामना की पूर्ति कृष्ण की अनन्य और भक्ति के माध्यम से पूरी की ।

प्रश्न ५. मीरा ने अपने प्रभु से क्या प्रार्थना की है ?

उत्तर :मीरा ने अपने प्रभु श्री कृष्ण से लोगों की पीड़ा दूर करने की प्रार्थना की है ।उनके प्रभु श्री कृष्ण ने द्रोपदी ,प्रहलाद और गजराज की जिस तरह सहायता की थी और उन्हें विपदा से मुक्ति दिलाई उसी तरह मीरा अपनी पीड़ा दूर करने की प्रार्थना अपने प्रभु से की है ।

दत्त कार्य

तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेन्द्र

प्रश्न १. `तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेन्द्र ` पाठ में राजकपूर के सर्वोत्कृष्ट अभिनय का श्रेय किसे दिया गया और क्यों?

उत्तर: राजकपूर के सर्वोत्कृष्ट अभिनय का श्रेय शैलेन्द्र को जाता है जो फिल्मों की चकाचौंध ,धन की लिप्सा आदि से कोसों दूर थे ।उनको आत्मसंतुष्टि प्रिय थी। `सादा जीवन उच्च विचार `की उक्ति उनके ऊपर सटीक बैठती है । उन्होंनेही राजकपूर की भावनाओं को शब्द दिए तथा हीरामन की आत्मा में राजकुमार को इस तरह से उतार दिया कि राजकपूर राजकपूर हीरामन में ही आत्मसात हो गए थे ।यह सब कुछ शैलेन्द्र ने बड़ी कुशलता तथा सौंदर्यपूर्ण ढंग से किया है।

प्रश्न २. एक निर्माता के रूप में बड़े व्यावसायिक सूझ -बूझ वाले व्यक्ति भी चक्कर खा जाते हैं। फिर भी शैलेन्द्र ने फिल्म क्यों बनाई ? तर्क सहित उत्तर दीजिए ।

उत्तर :एक फिल्म निर्माता के रूप में बड़े व्यावसायिक सूझ -बूझ वाले व्यक्ति भी चक्कर खा जातें हैं क्योंकि उन्हें बहुत सोच समझ कर फिल्म का निर्माण करना पड़ता है । उनका उदेश्य `लाभ कमाना`होता है । `धन-लिप्सा` ही उनकी मनोवृत्ति होती है । शैलेन्द्र ने `आत्म-संतुष्टि` व `सुख`के लिए फिल्म का निर्माण किया था ।व्यावसायिक सूझ-बूझ वाले लोग पैसा कमाने के लिए सस्ती लोकप्रियता के तत्वों को कोई महत्त्व नहीं दिया ।शैलेन्द्र अच्छी फिल्म बनाने की कला तो जानते थे ,किन्तु वे जनता को लुभाने के लिए अपने सिद्धांतों के साथ समझौता नहीं करना चाहते थे । यद्यपि फिल्म -निर्माता के रूप में शैलेन्द्र सर्वथा अयोग्य थे ,फिर भी उन्होंने `आत्मिक-संतुष्टि ` व `आत्मिक-सुख`के लिए फिल्म का निर्माण किया ।

प्रश्न ३.`तीसरी कसम`फिल्म की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

उत्तर:`तीसरी कसम`फिल्म सैल्यूलाइड पर लिखी कविता थी ।इस फिल्म की कहानी एक मार्मिक कविता के सामान है । इस फिल्म में मूल साहित्यिक रचना को उसी रूप में प्रस्तुत किया गया । इस फिल्म के गीत बहुत लोकप्रिय हुए ।इसके गीत दुरूह नहीं थे ।ये सभी गीत सहज व भाव -प्रवण थे ,वे संदेशप्रद थे ।इस फिल्म में राजकपूर व वहीदा रहमान जैसे महान कलाकारों ने अभिनय किया है ।इस फिल्म तथा गीतों को शंकर -जयकिशन जैसे महान सगीतकार ने सगीत दिया जो फिल्म के प्रदर्शन से पूर्व ही अत्यंत लोकप्रिय हो गए ।`तीसरी कसम` फिल्म में अन्य फिल्मों की तरह चकाचौंध के बजाए ,सहज लोकशैली को अपनाया गया ।इस फिल्म ने अपने गीत-संगीत ,कहानी आदि के लिए प्रसिद्धि प्राप्त की । इस फिल्म में अपने जमाने के सबसे बड़े शोमैन राजकपूर ने अपने जीवन का सबसे बेहतरीन अभिनय कर सबको हैरान कर दिया ।इस फिल्म को अनेक अंतर्राष्ट्रीय पुरुस्कारों से सम्मानित किया गया ।यह फिल्म ज़िंदगी से जुडी हुई है ।फ़िल्मी सफर में इसे मील का पत्थर मना गया है ।आज भी इस फिल्म की गणना हिंदी की अमर फिल्मों में की जाती है ।

दत्त कार्य

सपनों के-से दिन

प्रश्न१.पाठ में वर्णित घटनाओं के आधार पर पीटी सर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर:`सपनों के से दिन`पाठ के आधार पर पीटी सर की निम्नलिखित विशेषताओं का ज्ञान होता है-

(१) अनाकर्षक व्यक्तित्व--पीटी सर ठिगने कद के दुबले -पतले परन्तु गठीले शरीर वाले अध्यापक थे ,जिनके चेहरे पर चेचक के खूब सारे दाग थे ।उन्हें किसी ने हँसते हुए नहीं देखा था

(२)कठोर अनुशासनप्रियता --पीटी सर में इतनी अनुशासनप्रियता थी किअनुशासन बनाएरखने के लिए वे बच्चों को भयभीत रखते थे और शारीरिक दंड भी देते थे ।

(३)कुशल प्रशिक्षक -पीटी सर स्काउट-गाइड का प्रशिक्षण देते थे ।जब वे छात्रों के हाथों के लाल -पीली झंडिआं थमाकर ऊपर-नीचे कराते तो बच्चे बिना गलती किये उनके निर्देशों का पालन करते ।

(४)पक्षीप्रेमी-पीटी सर पक्षी प्रेमी थे ।वे अपने घर पर पाले गए तोतों को भीगे बादाम कि छिली हुई गिरियां खिलाया करते थे। वास्तव में पीटी सर की छवि एक शुष्क और डरावने अध्यापक की थी ।

प्रश्न २.प्रायः अभिभावक बच्चों को खेल-कूद में ज़्यादा रूचिलेने पर रोकते हैं और समय बर्बाद न करने की नसीहत देते हैं ।बताइए- (क) खेल आप के लिए क्यों ज़रूरी हैं ?

(ख) आप कौन-से ऐसे नियम -कायदों को अपनाएंगे जिससे अभिभावकों को आपके खेल पर आपत्ति न हो ?

उत्तर : (क)खेल बच्चों के शारीरिक विकास के लिए उतना ही आवश्यक है ,जितनाकि मानसिक विकास के लिए शिक्षा ।खेल हर बच्चे के लिए बहुत आवश्यक होते हैं ।इससे उनका शारीरिक और मानसिक विकास दोनों ही होते हैं ।खेलों से बच्चों का सामाजिकविकास होता है ।उनसे सामूहिकता ,सहभागिता मिलजुल कर काम करने की भावना विकसित होती है।खेलों से बच्चा हार -जीत के माध्यम से सुख -दुःख सामान भाव से ग्रहण करता है।इससे बच्चे में प्रतिस्पर्धा में आगे रहने की कला विकसित होती है ।आज खेल यश ,प्रतिष्ठा ,अच्छी नौकरी और उच्च आय अर्जन के साधन बन चुके हैं ।

(ख) अभिभावक खेलकूद को बच्चों के लिए अच्छा नहीं समझते हैं ।वे इसे पढ़ाई में बाधक मानते हुए समय बर्बाद करने का साधन मानते हैं ।अभिभावकों को मेरे खेल पर आपत्ति न हो इसके लिए मैं--- (१) खेलकूद और पढ़ाई में संतुलन बनाऊंगा ।

(२)पढ़ाई और गृहकार्य के बाद खेलकूद करूंगा ।

(३) स्कूल से अधिक कार्य मिलने पर मैं उस दिन नहीं खेलूंगा । इसकी भरपाई के लिए मैं छुट्टी वाले दिन खेलकर कर लूंगा ।

(४)अभिभावकों को खेलकूद की उपयोगिता एवं महत्ता समझाऊंगा ।

पर्वत प्रदेश में पावस

प्रश्न १.`पल-पल परिवर्तित प्रकृति -वेश `से कवि का क्या तातपर्य है ?
उत्तर :`पल-पल परिवर्तित प्रकृति-वेश` का शाब्दिक अर्थ है -प्रकृति हर पल अपना रूप बदल रही है । प्रस्तुत कविता में वर्षा ऋतु में पर्वतीय प्रदेश के हर पल परिवर्तित हो रहे परिवेश का चित्रण किया गया है । कभी पर्वत फूल रुपी आँखों के माध्यम से नीचे तालाब में अपना रूप निहारते हैं,तो कभी झरने पर्वत का गौरवगान करते हैं ।पर्वत पर उगे पेड़ों की तुलना उच्चाकांक्षाओं से की गई है । कभी पर्वत बादलों के पीछे छिप जाते हैंतो कभी शाल के वृक्ष धरती में धंस गए प्रतीत होते हैं । दृश्य तेजी से बदलते रहते हैं।

प्रश्न २.बादलों के पंख लगाकर कौन उड़ गया और कैसे ?
उत्तर :पर्वतीय प्रदेश में वर्षा ऋतु में दृश्य तेजी से बदल जाते हैं । कभी-कभी अचानक पर्वत को घने बादल घेर लेते हैं । पर्वत अदृश्य हो जाता है । तब लगता है जो पर्वत कुछ पल पूर्व हमारी आँखों के सामने था ,वह अचानक बादलों के पंख लगाकर उड़ गया है । यही नहीं ,पर्वत पर बहते झरने ,शाल के वृक्ष आदि भी अदृश्य हो जाते हैं ।

प्रश्न ३.`पर्वत प्रदेश में पावस `कविता का प्रतिपाद्य लगभग ६०-७० शब्दों में लिखिए ।
उत्तर:`पर्वत प्रदेश में पावस `के कवि सुमित्रानंदन पंत न केवल पाठकों को पावस ऋतु में पर्वतीय प्रदेश के सौंदर्य से परिचित कराना चाहते हैं ,बल्कि इस सौंदर्य को परखने और सराहने की भावना का भी विकास करना चाहते हैं । पहाड़ों की अपार श्रृंखला ,पहाड़ों पर बहते झरनें ,पेड़ों का चुपचाप आकाश को ताकना ,बादलों के पंख लगाकर पहाड़ों का उड़ जाना ,शाल के पेड़ों का धरती में धंस जाना आदि दृश्य यह अनुभूति देते हैं किहमारे आस पास की दीवारें कहीं विलीन हो गई हैं और हम अभी-अभी पर्वतीय अंचल में विचरण करके लौटे हैं । प्रकृति का अति सुन्दर मानवीकरण किया गया है ।

दत्त कार्य

पाठ : कारतूस

प्रश्न1.भारतीय नवाबों ने अंग्रेजों से पीछा छुड़ा।ने के लिए विदेशी शासकों का भी सहारा लिया इसमें वे कितना सफल
रहे । पाठ के आलोक में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :भारतीय नवाबों को जब अंग्रेजों की कुटिल नीतियाँ समझ में आई तो उन्होंने अंग्रेजों का विरोध करना शुरू कर दिया पर शायद तब तक बहुत देर हो चुकी थी। अंग्रेज 'फूट डालो और शासन करो ' की नीति अपनाते हुए संपूर्ण भारत पर शासनकरने का हर संभव हथकंडा अपना रहे थे । भारतीय नवाबों ने उनकी नीतियों का विरोध करते हुए उनसे युद्ध किया । इसमें सफलता न मिलती देखकर उन्होंने अफगानिस्तान के शासक शाहे...जमा को भी भारत पर हमला करने के लिए आमंत्रित किया। इस क्रम में सबसे टीपू सुंल्लान ने सबसे पहले इस अफगान शासक को बुलावा भेजा। फिर बंगाल के नवाब शम्सुद्दोला और अबध के नबाब वजीर अली ने शाहे-जमा को बुलावा भेजा पर इस प्रयास से भी अंग्रेजों से पीछा छुडाने में असफल रहे ।

प्रश्न 2.वजीर अली को चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख 'कारतूस' पाठ के आधार पर कीजिए।

उत्तर :'कारतूस' पाठ से ज्ञात होता है कि वजीर अली अत्यंत साहसी , बीर, महत्तचाकांक्षी और स्वाभिमानी शासक था । अवध की सत्ता छिनने के बाद उसके इन गुण को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उसकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्बलिखित हैं--

(क) **साहसी** -वजीर अली के साहस की जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम ही है । वह कर्नल के कैंप में घुसकर उसकी कारतूस लाता है वह कंपनी के वकील की हत्या पहले ही कर चुका था । ये उसके साहसी होने के प्रमाण हैं ।

(ख) **वीर** -वजीर अली इतना बीर है कि अवध की सत्ता छिनने के बाद भी अंग्रेजों को देश से खदेड़ने के लिए कटिबद्ध रहता है ।

(ग) **महत्वाकांक्षी** -वज़ीर अली महत्वाकांक्षी व्यक्ति है। वह अवध का शासक बनने की महत्वाकांक्षा सदा बनाए रखता है ।

(घ) **स्वाभिमानी** -वजीर अली इतना स्वाभिमानी है कि वह कंपनी के वकील की अपमानजनक बातों को सह नहीं पाता है और उसकी हत्या कर देता है ।

प्रश्न 3. 'कारतूस' पाठ में निहित संदेश स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :'कारतूस' नामक एकांकी के माध्यम से खोई आजादी की कीमत पहचानने, उसकी रक्षा करने का संदेश दिया गया है । पाठके माध्यम से बताया गया है कि हम यदि समय रहते सचेत न हुए तो हमें गुलाम होने से कोई भी नहीं बचा सकता है ।हमें देश प्रेम , देशभक्ति, साहस, त्याग जैसी मानवीय भावनाएँ सदा प्रगाढ़ रखनी चाहिए। जिस तरह कुछ नबाबों ने अंत तक देश को आज़ाद कराने का प्रयास किया तथा अंग्रेजों क्री दासता स्वीकार नहीं को उसी प्रकार हमें भी किसी लोभ या स्वार्थ के वशीभूत हुए बिना आजादी बनाए रखना चाहिए।

दत्त कार्य

कक्षा दसवीं

मधुर मधुर मेरे दीपक जल

प्रश्न १.आपकी दृष्टि में `मधुर मधुर मेरे दीपक जल ` कविता का सौंदर्य इनमें से किस पर निर्भर है -

(क) शब्दों की आवृत्ति पर ।

(ख) सफल बिम्ब अंकन पर।

उत्तर -मेरा मानना यह है कि `मधुर मधुर मेरे दीपक जल । ` कविता का सौंदर्य शब्दों की आवृत्ति और सफल बिम्बांकन दोनों पर ही निर्भर है ;जैसे

- शब्दों की आवृत्ति से उत्पन्न सौंदर्य --इस कविता में अनेक स्थानों पर शब्दों की आवृत्ति से उत्पन्न सौंदर्य देखिए -

मधुर मधुर मेरे दीपक जल ।
युग युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल ,
प्रियतम का पथ आलोकित कर।
सौरभ फैला विपुल धूप बन ,
मृदुल मोम सा घुल रे मृदु तन;
दे प्रकाश का सिंधु अपरिमित ,
तेरे जीवन का अणु गल गल !
पुलक पुलक मेरे दीपक जल !

सफल बिम्बांकन से उत्पन्न सौंदर्य --- कविता में बिम्बों का सफल अंकन हुआ है ,इस कारण सौंदर्य में वृद्धि हो गई है --

- मधुर -मधुर मेरे दीपक जल
-सौरभ फैला विपुल धूप बन
-विश्व -शलभ सिर धुन कहता मैं
- जलते नभ में देख असंख्यक
स्नेहहीन नित कितने दीपक
- लेविदयुत घिरता हेबादल !

प्रश्न २.क्या मीराबाई और `आधुनिक मीरा` महादेवी वर्माइन दोनों ने अपने-अपने आराध्य देव से मिलने के लिए जो युक्तियाँ अपनाईं हैं ,उनमें आपको कुछ समानता या अंतर् प्रतीत होता है ? अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर - मीरा बाई और आधुनिक मीरा कहलाने वाली कवयित्री महादेवी वर्मा दोनों ने जो युक्तियाँ अपनाईं हैं ,उनमें असमानता अधिकऔरसमानता कम है क्योंकि -

असमानता -मीराबाई अपने प्रभु कृष्ण के रूप सौंदर्य पर मोहित हैं ।वे उनसे मिलने के लिए उनकी चाकरी करना चाहती हैं ।उनके लिए बाग़ लगाना चाहती है ताकि कृष्ण वहां विहार के लिए आएं तो मीरा उनके दर्शन कर सकें ।वे लाल रंग की साड़ी पहनकर अर्धरात्रि में यमुना किनारे आने के लिए कृष्ण से कहती हैं ।

महादेवी वर्मा के प्रभु निराकार ब्रह्म हैं जिन तक पहुँचने के लिए वे अपनी आस्था का दीपक जलाये रखना चाहती हैं ।

समानता - मीराबाई और महादेवी वर्मा दोनों ही अपने-अपने आराध्य की अनन्य भक्त हैं ।वे पलभर के लिए भी अपने आराध्य को नहीं भूलना चाहती हैं ।

प्रश्न ३.`मधुर-मधुर मेरे दीपक जल ` कविता के आधार पर कवयित्री की भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए ।

उत्तर : `मधुर-मधुर मेरे दीपक जल ` कविता में कवियत्री की आध्यात्मिकता का वर्णन है ।वह अपने प्रभु के चरणों में आस्था का दीपक जलाती है और अनवरत जलाये रखना चाहती है ।वह इस दीपक से कभी मधुर भाव से जलने के लिए कहती है तो कभी पुलक-पुलक करऔर कभी विहँस -विहँस कर ।वह अपने दीपक की लौ में अपने अहं को जलाकर अपने आराध्य के प्रति पूर्ण समर्पण प्रकट करती है ।संसार के लोग सांसारिक सुखों में डूबकर ईर्ष्या और तृष्णा के कारन जल रहे हैं ।कवयित्री चाहती है कि वे भी प्रकाश पुंज से चिंगारी लेकर भक्ति की लौ जलायें।वह अपने प्रियतम का पथ आलोकित करने के लिए आस्था का दीपक सदा-सदा के लिए जलाकर भक्ति भावना से सारा संसार महकना चाहती है ।

कक्षा दसवीं

आत्मत्राण

प्रश्न १ .`आत्मत्राण` में निहित सन्देश स्पष्ट कीजिये ।

उत्तर --`आत्मत्राण`कविता में कविप्रभु से दुःख दूर करने की प्रार्थना नहीं करता है बल्कि वह स्वयं अपने साहस और आत्मबल से दुखों को सहना चाहता हैतथा उनसे पार पाना चाहता है ।इस कविता में निहित सन्देश यह है कि हम अपने दुखों के लिए प्रभु को जिम्मेदार न ठहरायें ।हम दुखों को सहर्ष स्वीकार करें तथा उनसे पीछा छुड़ाने की बजाय उन्हें सहें तथा उनका मुकाबला करें । दुखों से परेशान होकर हम आस्थावादी बनने की जगह निराशावादी न बने । हम हर प्रकार की स्थिति में प्रभु के प्रति अटूट आस्था एवं विश्वास बनाये रखें ।

प्रश्न २ .`आत्मत्राण`कविता हमें दुःख से संघर्ष करने का मार्ग दिखाती है ।स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर :`आत्मत्राण` कविता में दुःख के प्रति एक अलग दृष्टिकोण प्रकट हुआ है । इस कविता में दुःख से पलायन करने की प्रवृति त्यागकर उसे सहर्ष स्वीकारने तथा उस पर विजय पाने की प्रेरणा दी गई है । कविता में दुःख और सुख दोनों को समान भाव से अपनाने का सन्देश है । दुःख के समय में भी प्रभु के प्रति मन में संदेह न पैदा होने देने तथा हर स्थिति में आस्था एवं विश्वास बनाये रखने के लिए प्रेरित किया गया है जिससे हमारी आस्थावादिता बढ़ती है ।इस तरह सुख में प्रभु को धन्यवाद देने तथा दुःख को आत्मबल से जीतने का भाव समाहित करने वाली यह कविता हमें दुःख से संघर्ष करने का मार्ग दिखलाती है ।

प्रश्न ३ .`दुःख` के सम्बन्ध में हमारी प्रार्थना और कवि की प्रार्थना में क्या अंतर है ?

उत्तर :`दुःख` के सम्बन्ध में हमारी प्रार्थना यह होती है कि प्रभु हमारे दुःख हर लो ।इस दुःख से मुक्ति दिलाओ और दुखों से बचाकर रखना ।

कवि यह प्रार्थना करता है कि में दुखों से बचाने, उन्हें दूर करने कि प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ । में तो दुःख सहने की शक्ति और साहस आपसे मांग रहा हूँ ।

दत्त कार्य

बिहारी :दोहे

प्रश्न १. बिहारी के दोहों का प्रतिपाद्य क्या है ?

उत्तर : हमारी पाठ्यपुस्तक `स्पर्श भाग-२` में बिहारी द्वारा रचित आठ दोहे संकलित हैं । बिहारी मुख्य से शृंगारपरक दोहों के लिए जाने जाते हैं ,पर उन्होंने लोक-व्यवहार ,नीति-ज्ञान तथा भक्ति सम्बन्धी दोहे भी रचे हैं ।संकलित दोहों में सभी छटाएँ विद्यमान हैं ।

प्रथम दोहे में श्री कृष्ण के रूप-सौंदर्य का वर्णन है ।

दूसरे और पांचवें दोहों में ग्रीष्म ऋतु की भयंकरता के प्रभाव को चित्रित किया गया है ।

तीसरे दोहे में गोपियों के बतरस -लालच की झांकी है ।वे कृष्ण से बातें करने का अवसर खोज ही लेती हैं ।

चौथे दोहे में संयोग -श्रंगार की कुशल अभिव्यक्ति हुई है ।यह बिहारी का ही कमाल है कि वे भरे भवन में नायक-नायिका की बातें सांकेतिक भाषा में करा देते हैं ।

छठे दोहे में विरहिणी नायिका की विवशता का मार्मिक अंकन है ।

सातवां -आठवां दोहा भक्ति भावना से सम्बंधित है । आठवें दोहे में धर्म के बाह्य चिन्हों को निरर्थक बताया गया है ।

प्रश्न २. बिहारी के दोहों के बारे में ऐसा क्यों कहा गया है --

सतसैया के दोहरे , ज्यों नावक के तीर ।
देखन में छोटे लगै,घाव करें गंभीर ॥

उत्तर -- बिहारी के दोहों के बारे में ऐसा इसलिए कहा गया है क्योंकि बिहारी ने `सतसई` की रचना की । इसमें लगभग सात सौ दोहे संकलित हैं ।दोहा एक छोटा सा २४ मात्राओं वाला छंद है ।पर कवि बिहारी का यह काव्य-कौशल है कि उन्होंने इस छोटे से छंद में गहरे भावों का समावेश कर दिया है । ये दोहे इतने मार्मिक हैं कि इनका प्रभाव बड़ा गहरा होता है । यह गंभीर घाव करने के समान है ।उन्होंने अपने दोहों में गागर में सागर भर दिया है ।

बतरस -लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ।
सौंह करैं भौंहनु हँसै ,दैन कहैं नटी जाइ॥

इसी प्रकार ---

कहत, नटत ,रीझत ,खीझत ,मिळत,खिलअत,लजियात ।
भरे भौंन मैं करत हैं नैननु हीं सब बात ॥

प्रश्न ३. बिहारी की भाषा - शैली पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ।

उत्तर - बिहारी ने अपने दोहों में ब्रजभाषा के मानक रूप का प्रयोग किया है । उनकी `सतसई`में मुख्यतः प्रेम,श्रृंगार,नीति और भक्ति सम्बन्धी दोहे हैं ।

बिहारी ने दोहा छंद अपनाया है । यह २४ मात्राओं का छंद है ।अन्य रीतिकालीन कवियों के समान बिहारी भी अलंकारों के प्रयोग में अत्यंन्त कुशल हैं । कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं --

–मनौ नीलमनि-सैल पर-उत्प्रेक्षा अलंकार ।

– `भरे भौन`, `पितु पटु`–अनुप्रास अलंकार ।

बिहारी के दोहों में सर्वत्र माधुर्य गन का समावेश है ।

कक्षा दसवीं

हरिहर काका

प्रश्न १. हरिहर काका के गांव की ठाकुरबारी कैसी थी ?

उत्तर : जब हरिहर काका का गांव पूरी तरह बसा भी नहीं था तभी कहीं से आकर एक संत इस स्थान पर झोंपड़ी बनाकर रहने लगे थे। वे सुबह शाम ठाकुर जी की पूजा करते थे ,लोगों से मांगकर खाते थे तथा उनके दिल में भक्तिभाव पैदा करते थे। बाद में लोगों ने चंदा इकट्ठा करके वहां ठाकुरजी का छोटा- सा मंदिर बनवा दिया । जैसे -जैसे गांव बस्ता गया ,आबादी बढ़ती गई ,मंदिर के कलेवर में विस्तार होता गया । ठाकुरजी की मनौती मानने पर लोगों के घर पुत्र उत्पन्न होता,मुकदमे में विजय और लड़की की शादी होती । वे ठाकुरजी पर रूपए ,जेवर और अनाज चढ़ाते । अधिक ख़ुशी होती ,तो अपना छोटा सा खेत भी मंदिर के नाम कर देते । इस सबके परिणामस्वरूप आज ठाकुरबारी का कारोबार हज़ारगुणा हुआ है और वह गांव ठाकुरबारी से ही जाना जाता है ।

प्रश्न २ .`हरिहर काका `कहानी समाज के किन पहलुओं की ओर ध्यान आकर्षित करती है ?

उत्तर : कोई भी मनुष्य समाज में अकेला नहीं रह सकता ।हर किसी को दूसरे की सहायता की आवशयकता पड़ती है । आज के समाज की स्वार्थता तथा लालच का प्रस्तुत कहानी में वर्णन किया गया है । हमारे अपने भी लोभ-लालच में पढ़कर अपने ही भाई-बंधू की जान के पीछे पड़ जाते हैं ,यह हरिहर काका के परिवार के माध्यम से बताया गया है ।साधारण मानव की बात तो एक तरफ रही,समाज के पथ-प्रदर्शक समझे जाने वाले संत-महात्मा भी लालच के भँवर में फंसकर रह गए हैं ।एक अकेले दुखी हरिहर काका के एकाकीपन ओर पारिवारिक असंतोष का लाभ उठाकर ठाकुरबारी के महंत ने उसकी जायदाद को हथियाने के लिए जो हथकंडे अपनाए ,उसके बारे में सोचकर लज्जा आती है ।भौतिकवादी समाज लालच की ऐसी खाई में गिरता जा रहा था की अपने ही परिवार के सदस्य की मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे थे । जीते-जी भी उसे सुख नहीं दे रहे थे । वह और उसका जीवन केवल यातनाओं का पुंज बन कर रह गया था।ग्रामवासी भी उसकी सहायता के लिए कोई कदम उठाने के स्थान पर उसकी समस्याओं को चटखारे ले-लेकर बखान करते थे और अपना मनोरंजन भी ।

प्रश्न ३. हरिहर काका को महंत और अपने भाई एक हीश्रेणी के क्यों लगे थे?

उत्तर : हरिहर काका का अपने परिवार के नाम पर केवल भाई-भतीजे तथा भाइओं की पत्नियां थीं । उनके पास 15 बीघे जमीन थी ,जो सुख के स्थान पर उनके जीवन की यातना बनकर रह गई थी ।एक ओर से तो मंदिर का महंत हरिहर काका को अपनी सम्पत्ति ठाकुरबारी के नाम पर कर देने के लिए बहला-फुसला रहा था और उनके मना करने देने पर ज़बरदस्ती उनको उनके घर से उठवा लाया तथा उन्हें ठाकुरबारी में बंद करके यातनायें देकर जबरन खाली कागज़ पर अंगूठा लगवाया ,तो दूसरी ओर उनके भाइओं ने उन्हें दुःख व कष्ट देकर ,भय दिखाकर ,महंत से भी अधिक उनकी दुर्दशा करके उनसे खाली कागज़ पर अंगूठा लगवाया । इस सारी स्थिति को देखकर हरिहर काका को महंत और अपने भाई एक-से लगे ।महंत लोगों से छिप-छिप कर दौलत के नाम पर अत्याचार कर रहा था ,तो भाई खुल्लम-खुल्ला उन्हें दबाकर ,डरा-धमका कर दौलत अपने नाम करवाना चाहते थे ।

कक्षा:X (बड़े भाई साहब)

1. जिंदगी के अनुभवों के बारे में बड़े भाई के विचारों से आप कहाँ तक सहमत हैं ?तर्क सहित उत्तर दें ।
उ॰ बड़े भाई के अनुसार जिंदगी की समझ जीवन जीने तथा उसके अनुभव से आती है। इसमें उम्र का विशेष महत्व है। हमारे बड़े-बुज़ुर्गों ने चाहे पुस्तकें भैये ही न पढ़ी हों, लेकिन अपने अनुभवों के आधार पर उन्हें दुनियादारी की अनेक बातें हमसे कहीं अधिक पता होती हैं। बड़े भाईसहब के इन विचारों से मैं पूरी तरह सहमत हूँ। ज्ञान का अर्थ केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं होता । जीवन के अनुभव से हम जो दुनियादारी सीखते हैं, वह किताबों से अधिक महत्वपूर्ण ज्ञान है । ऐसा ज्ञान हमें जीवन की परिस्थितियों का सामना करना सिखाता है। उलझनों को धैर्यपूर्वक सुलझाना सिखाता है।

2. "अहंकार मानुष्य का विनाश करता है"–इस कथन को स्पष्ट करने के लिए बड़े भाई ने क्या-क्या उदाहरण दिये ?
उ॰ भाईसहब की सहज बुद्धि ने जब यह भाँप लिया कि छोटे भाई पर अब उनका पहले का-सा रौब नहीं रहा तो उन्होने उसे समझाया कि एक कक्षा में पास हो जाने पर उसे अहंकार नहीं करना चाहिए, क्योंकि घमंड तो अच्छे-अच्छों का नहीं रहा। इसी घमंड के कारण चक्रवर्ती राजा रावण के अंतिम समय में कोई उसे चुल्लू भर पानी देने वाला भी नहीं बचा। शैतान अपने अहंकार के कारण स्वर्ग से नर्क में धकेल दिया गया। शाहेरूम भीख माँग-मांगकर मर गया। इसलिए मनुष्य को घमंड कभी नहीं करना चाहिए।

3. कहानी के आधार पर स्पष्ट करें कि केवल बड़े होने से सबकुछ करने का अधिकार नहीं नील जाता।
उ॰ बड़े होने से कुछ भी करने का अधिकार नहीं मिल जाता। कभी-कभी तो घर के बड़े बच्चे को उन कार्यों में शामिल होने से भी खुद को रोकना पड़ता है जो उसी उम्र के अन्य बच्चे बेधड़क करते हैं। प्रस्तुत पाठ में बड़े भाईसाहब, हैं तो छोटे ही, लेकिन घर में उनसे छोटा भाई भी है। कुछ साल बड़े होने के कारण उनसे बड़ी-बड़ी अपेक्षाएँ की जाती हैं। उन्हें अपनी इच्छाओं को मन में ही दबना पड़ता है क्योंकि छोटे भाई के सम्मुख उसे एक आदर्श प्रस्तुत करना है। यदि वे बेराह चलेंगे तो छोटे को सही राह कैसे दिखाएँगे ।

4. बड़े भाईसहब का चरित्र-चित्रण करें ।
उ॰ बड़े भाई का छोटे के प्रति व्यवहार ; पढ़ाई से विमुख होने पर उसे समझाना ; तरह-तरह के उदाहरण देकर उसे दुनियादारी का पाठ पढ़ना ; व्यंग्य-वाण चलाकर उसे उसकी गलती का अहसास करना ; आवश्यकता पड़ने पर क्रोध करना ; छोटे भाई को सही राह दिखने के लिए अपनी इच्छाएँ दबाकर सारा दिन अध्ययन करना ; एक ही कक्षा में बार-बार फ़ेल होने पर धैर्य पूर्वक अध्ययन में जुटे रहना तथा बिना कहे ही छोटे भाई के मन की बात जान लेना । इन सब बातों से यह स्पष्ट होता है की बड़े भाईसाहब सीधे, सरल, सच्चे, अध्ययनशील, परिश्रमी, धैर्यवान, जिम्मेदार, उपदेश-कला में निपुण तथा स्पष्ट-वक्ता थे।

दत्त कार्य

कक्षा दसवीं

`कर चले हम फ़िदा `

प्रश्न १.`कर चले हम फ़िदा ` कविता युवाओं में राष्ट्र -प्रेम और देशभक्ति की भावना प्रगाढ़ करती है स्पष्ट कीजिये

उत्तर : `कर चले हम फ़िदा ` कविता में भारतीय सैनिकों एवं वीरता की गाथा है । इन सैनिकों ने अत्यंत विपरीत परिस्थितिओं में चीनी सैनिकों को मुहंतोड़ जवाब दिया और उन्हें रोकते हुए आगे ही आगे कदम बढ़ाते गए।देश की रक्षा करते हुए उन्होंने अपनी जान की परवाह नहीं की और कुर्बान हो गए । यह कविता पढ़कर युवामन जोश से भर उठता है तथा देश एवं मातृभूमि की शत्रुओं से रक्षा करने के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए प्रेरित होता है ।उनकी देश भक्ति हिलोरें लेने लगती है ।वह साहस एवं जोश से भर उठता है । इस प्रकार यह कविता राष्ट्र प्रेम और देशभक्ति की भावना प्रगाढ़ करती है ।

प्रश्न २ `कर चले हम फ़िदा ` कविता की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर :` कर चलें हम फ़िदा `कविता में १९६२ में चीन के साथ हुए युद्ध का मर्मस्पर्शी वर्णन है ।यह कविता एक ओर भारतीयों के साहस तथा वीरता का उत्कृष्ट नमूना प्रस्तुत करती है ,साथ ही उनके त्याग एवं बलिदान की अनुपम गाथा भी दोहराती है ।यह कविता अपने रचना काल में जितनी प्रासगिक थी उससे कहीं अधिक आज प्रासंगिक है ।आज देश में पड़ोसी देश से जब घुसपैठ का खतरा बढ़ा है ,जयचंदों की संख्या बड़ी है तथा लोग भाषा,जाति,क्षेत्र ,धर्म आदि के नाम `अपनी डफली अपना राग `अलाप रहें हों ,तब इस कविता की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है । यह कविता वीरों का उत्साह बढ़ाने और युवाओं में राष्ट्रभक्ति प्रगाढ़ करने के लिए अधिक प्रासंगिक है ।

प्रश्न ३. `कर चले हम फ़िदा `कविता में राम ,सीता और रावण का प्रयोग किन संदर्भों में हुआ है ,स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर : `कर चले हम फ़िदा` कविता में राम, लक्ष्मण ,सीता और रावण जैसे पौराणिक पात्रों का प्रयोग देशवासियों ,भारतमाता और देश के शत्रुओं के सन्दर्भ में किया गया है । सीता अत्यंत सुन्दर,पवित्र गरिमामयी स्त्री थी ।कुछ ऐसी ही स्थिति हमारी मातृभूमि भारतमाता की है ।यह हमारी भारतमाता तरह-तरह से समृद्ध और गौरवपूर्ण है ।कुछ शत्रुरुपी रावण इसकी ओर

कुदृष्टि रखते हैं और अपना बना लेना चाहतें हैं । जिस प्रकार राम और लक्ष्मण ने रावण को मारकर सीता की रक्षा की थी ,उसी प्रकार भारतीय सैनिकों और देशवासियों से अपेक्षा की गई है कि वे सीतारूपी भारतमाता की रक्षा के लिए रावण रुपी शत्रुओं से युद्ध करें तथा आवश्यक्ता पड़ने पर अपना बलिदान देकर साहस तथा वीरता की नई गाथा लिखें ।